भग्रति ड्रिनी भग्रवान, जनि खे परिची पांहिंजी,
सहजे थिया सामी चए, से नेही निरिब्राण,
जनम मरण दुख सुख जी, कलिपत करिनि कान,
रहनि मंझि जहान, सदा अलेपु आकास जां.

भक्ति की शक्ति और भगवान की दयालुता का वर्णन करते हुए सामी साहब कहते हैं कि जिन प्रेमीजनों को परमेश्वर ने प्रसन्न होकर अपनी भक्ति प्रदान की है, वे सहज ही इच्छा-रहित होकर मुक्त हो गये। वे अनेक सन्सों/भ्रमों से भी मुक्त हो गये। परमेश्वर की भक्ति निष्ठापूर्वक करने से अब वे किसी प्रकार के सुख-दुःख अथवा जन्म-मृत्यु की चिंता नहीं करते। वे इस लोक में आकाश की तरह निर्लिप्त/अलिप्त और निष्कलंक रहकर भक्ति करते रहते हैं।

परमेश्वर के प्रति प्रेम भक्ति है। सगुण परमात्मा और जीवन का निष्काम प्रेम-संबंध भक्ति है। सरल और हर स्थान पर प्राप्त होने के कारण पृथ्वी लोक में भक्ति का प्रचार-प्रसार बहुत है। भक्ति का शाब्दिक अर्थ है भगवान की सेवा करना। भगवान का अस्तित्व हर स्थान पर और हर पदार्थ में होने से जगत् की सेवा ही भगवान की सेवा मानी गयी है। भक्ति क्या है? 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' (शांडिल्य), ईश्वर से अत्यधिक प्रेम भक्ति है। भगवान विष्णु के श्रवण, कीर्तन, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, स्मरण एवं आत्मनिवेदन (शरणागति) को 'नवधा' भक्ति' कहते हैं। भक्ति साधन भी है और साध्य भी । ईश्वर को अपना स्वामी, मित्र, माता, प्रियतम आदि मान कर दास्य, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की भक्ति की जाती है। भक्तजन भक्ति को मोक्ष-मुक्ति से भी श्रेष्ठ समझते हैं। परमात्मा की अनन्य भक्ति मनुष्य के अहंकार को विगलित कर देती है, उसे देहाभिमान से रहित कर देती है। सच्चा भक्त अंतर्यामी प्रभु को अपने मन मंदिर में आसीन करके उसे ही अपना सब कुछ मानकर उसकी प्रेरणा के अनुसार कर्म करता है और फिर उसे ही अपने कर्म अर्पित कर देता है। मनुष्य के चित्त को निर्मल कर देने वाली अनन्य भक्ति पाकर भक्त धन्य हो जाता है, कृत्यकृत्य हो जाता है। अब उसे किसी का भय नहीं, न मृत्यु का और न ही जन्म-मरण के कुचक्र में पड़ जाने का। संत तुकाराम जी के शब्दो में-

आम्ही जरी आस। जालों टाकोनि उदास।
आला कोण भय धरी। पुढे मरणाचे हरी।।

■